कृभको

जनवरी माह के कृषि कार्य

किसान बहिनों एवं भाईयों, नमस्कार ! जनवरी माह जिसे आप पौष-माघ भी कहते हैं , सबसे ठंडा महिना होता हैं परंतु लोहडी व मकर संक्राति के त्यौहार व गणतंत्र दिवस को लेकर आता है और मौसम जोश व गर्मी भर देता है । हम आपके प्रश्नों पर आधारित जनवरी माह के कृषि कार्य बताएगें । लेख में नाप-तोल प्रति एकड के हिसाब से हैं ।

तीन जरूरी बातें -

- **सिंचाई या धुंआ** (पाले से सुरक्षा) - जनवरी में तापमान बहुत अधिक गिर जाने से पाला पडता है जिससे फसलें नष्ट भी हो सकती हैं । पाले के नुकसान से बचने के लिए शाम के समय खेतों के आस-पास आग जलाकर धुआं करें इससे तापमान बढ़ जाता है तथा पाला नहीं पडता । शाम को सिचाई करने से भी पाले से फसल सुरक्षित रहती है ।
- **बर्मी-कम्पोस्ट** (मिट्टी स्वास्थ्य वर्द्धक) - बर्मी कम्पोस्ट बनाने के लिए उचित तापमान २८-३५ डिग्री से.ग्रे. है परंतु इसे पूरे साल बनाया जा सकता है । सर्दियों में जब खेत पर काम कम होता है तथा पशुशाला का कूडा करकट व गोबर काफी मात्रा में उपलब्ध रहता है तो कैचुओं की मदद से उच्च गुणवत्ता की वर्मी-कम्पोस्ट बना सकते हैं । इससे मिट्टी की सेहत सुधरेगी व पैदावार में बढ़ोतरी होगी ।
- **चूहा नियंत्रण** (अन्न सुरक्षा) - जरूरी दवाईयों के अलावा, चूहों के जैविक नियंत्रण यानिकी उनके प्राकृतिक शत्रुओं को बढ़ावा देकर काबू पाया जा सकता है । जैसे की उल्लू, बाज, बिल्ली, सांप, लेवला, चील, गरूड आदि को बढ़ावा देकर चूहों की संख्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है । घरों में बिल्ली जरूर पालें ।

गेहूं - में सिचाई २५ से ३० दिन के अन्तर पर करते रहे । इस समय सिंचाई अच्छी पैदावार के लिए बहुत जरूरी है क्योंकि इस माह शिखर जडे तथा कल्ले फूटने की स्थिति रहती है । जनवरी अन्त तक हल्की मिट्टी वाली जमीन में एक बोरा यूरिया (१/३ नत्रजन की आखिरी किस्त) भी दे सकते है । दीमक का प्रकोप बारानी क्षेत्रों में होने की संभावना बनी रहती है । ऐसी स्थिति में २ लीटर लिण्डेन या क्लोरपाइरिफास को २ लीटर पानी में २० कि.ग्रा. रेत के साथ मिलाएं तथा गेहूं की खडी फसल में बुरकाव करके सिंचाई कर दें । सतही टिड्डा अंकुरित गेहूं के पोधौं को जमीन के पास से काटता है । इसीलिए इसे टोका भी कहते हैं । रोकथाम के लिए १० कि.ग्रा. मिथाइल पैराथियान २ प्रतिशत का धुडा करें ।

मोल्या-रोगग्रस्त पौधें पीले व बौने रह जाते है । इसमें फूटाव कम होता है तथा जडे छोटी व झाडीनुमा हो जाती है । जनवरी-फरवरी में छोटे-छोटे गोलाकार सफेद चमकते हुए मादा सुत्र-कृमि जडो पर साफ दिखाई देते है जो इस रोग की खास पहचान है । यह रोग समय पर बोये गेहूं पर नहीं आता है । संभावित रोगग्रस्त खेतों में ६ कि.ग्रा. एल्डीकार्व या १३ कि.ग्रा. कार्बोपयूरान बीजाई के समय खाद मे मिलाकर डालें । पाले से बचाव के लिए खेतों के आस-पास धुआ करें जिससे तापमान बढ़ जाता है तथा पाला पडने की संभावन कम हो जाती है । अधिक सर्दी वाले दिनों में शाम के समय सिंचाई करने से भी पाले से बचाव होता है ।

जौ - में भी दीमक तथा पाले से बचाव गेहूं की तरह ही करें तथा सिंचाई उपलब्ध होने पर अवश्य करें । जस्ते की कमी नजर आने पर गेहूं की तरह ही उपचार करें ।

सरसों - में जनवरी में फलियां बननी शुरू हो जाती हैं इसलिए खेत में नमी जरूरी है । अतः एक सिंचाई जरूर करें । इसे दाने मोटे व अधिक लगेंगे । जब तापमान १० से २० डिग्री सैल्ससियस तथा नमी ७५ प्रतिशत हो जाती है तो चेपा का आक्रमण तेज हो जाता है । चेपा हल्के हरे-पीले रंग का होता है तथा समूह में रहकर कलियों, फूलों व फलियों का रस चूसता है । चेपा रोकथाम के लिए २५० मि.ली. मैटासिस्टास्क या ६० मि.ली. फासफिमिडान ८५ एस एल को २५० लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें । १५ दिन बाद छिडकाव फिर से दोहराएं । बीमारियों पर नियंत्रण के लिए ६०० ग्राम मैन्काजेव (डाइथेन एम-४५) २५० लीटर पानी में का १५ दिन के अन्तर पर ३-४ बार छिडकाव करें ।

चना- की फसल फूल आने की अवस्था में होगी तो एक सिंचाई देने से अच्छा दाना पडेगा तथा पैदावार में बढ़ोतरी होगी । जस्ते की कमी होने पर फसल में पुरानी पत्तियां पीली तथा बाद में जली सी हो जाती है । जिंक सल्फेट की स्प्रे से उपचार करें । इसकी विधि पिछले माह बता चुके है । कटवा सुण्डी उगते पौधों के तनों को या शाखओं को काटकर नुकसान पहुचातें है । रोकथाम के लिए ०.४ प्रतिशत फैनबालरेट पाउडर १० कि.ग्रा. के हिसाब से घुडा करें । हैलियोथिस, पत्तों, फुलों , फलियों को खा जाने वाली सुण्डी है । रोकथाम के लिए ४०० मि.ली. ऐण्डोसल्फान ३५ ई सी को १०० लीटर पानी में घोलकर छिडकें तथा १५ दिन बाद फिर छिडकाव करें । यदि बीजोपचार किया है तो बहुत सी बीमारियों की रोकथाम अपने आप हो जाती है ।

दाना मटर - में सिंचाई जरूरत के अनुसार देते रहें । सिाप के नियंत्रण के लिए ५०० मि.ली.एण्डोसल्फान ३५ इ सी को २५० लीटर पानी में घोलकर छिडके । पाउडरी मिल्डयु नियंत्रण के लिए ०.३ प्रतिशत घुलनशील सल्फर का घोल छिडकें ।

मसूर - में व्हील हैंड हो से खोदकर खरपतवार निकाल दें इससे फसल में वृद्धि होगी । उपलब्धतानुसार सिंचाई कर सकते है ।

चारा - बरसीम, रिजका व जई की हर कटाई बार सिंचाई करते रहें इससे बढ़वार तुरंत होगी तथा अच्छी गुणवत्ता को चारा मिलता रहेगा । जई में कटाई के बाद आधा बोरा यूरिया भी डालें ।

शरदकालीन मक्की - में आवश्यकतानुसार सिंचाई करने से पाले से बचाव के साथ-साथ फसल भी अच्छी होती है ।

सुरजमुखी - की बीजाई जनवरी में भी हो सकती है । दिसम्बर में बोई फसल में नत्रजन की दूसरी व अंतिम किस्त एक बोरा यूरिया बीजाई के ३० दिन बाद दे दें तथा पहली सिंचाई भी करें । फसल उगने के १५ से २० दिन बाद गुडाई करके खरपतवार निकाल दें ।

गन्ना- शरदकालीन गन्ने में १/३ नत्रजन की तीसरी व आखरी किस्त 1 बोरा यूरिया डाल दें । जस्तें की कमी नजर आए तो ०.५ प्रतिशत जिंक सल्फेट एवं २.५ प्रतिशत यूरिया का घोल छिडके । खरपतवार की स्थिति में गुडाइ एवं सिंचाई करें । दीमक के आक्रमण होने पर २.५ लीटर क्लोरपाइरीफास २० ईसी ६०० लीटर पानी में घोलकर फुवारे से छिडके ।

टमाटर - नवम्बर माह में लगाई नर्सरी जनवरी माह में रोपी जा सकती है परंतु पाले से बचाव करते रहे । प्रत्येंक १० दिन बाद हल्की सिंचाई देते रहे । टमाटर के खेते में खरपतवार बिल्कुल नहीं होने चाहिए । इन्हें समय-समय पर निकालते रहें । पुरानी फसल में यदि फल छेदक का संक्रमण हो जाए तो खराब फलों को तुरंत तोडकर तुरंत नष्ट कर दें । अधिक संक्रमण की स्थिति में ०.१ प्रतिशत मैलाथियान या ०.१ प्रतिशत थायोडान १५ दिन के अन्तराल पर छिडकें । छिडकाव से पहले तैयार फल तोड लें तथा अगली तुडाई १५ दिन बाद करें ।

मिर्च - नवम्बर माह में लगाई गई नर्सरी जनवरी में रोपी जा सकती है । लाईनों व पौधों में १८ ईंच का फासला रखें । फैलने वाली किस्मों में फसला २४ ईच तक बढ़ा दें । रोपाई से पहले खेत में १०० किवंटन गोबर की सडी गली खाद 1 बोरा यूरिया (१/२ नत्रजन की दूसरी किस्त) १.५ बोरा सिंगल सुपर फास्फेट तथा 1 बोरा म्युरेट आफ पोटाश डालें । सर्दियों में १०-१५ दिन बाद हल्की सिंचाई से फूल व फल गिरते नहीं हैं व फसल पाले से भी बची रहती है ।

मटर - की फलियां तोडने के लिए तैयार हो गई होगी तथा फूल भी आ रहे होंगे । हल्की सिंचाई १० - १५ दिन बाद करते रहें । इससे फूल, फलियां तथा कोपलें भी पाले से बची रहेगी । कीट नियंत्रण के लिए ०.१ प्रतिशत मैलाथियान या ०.१ प्रतिशत एण्डोसल्फान का स्प्रे १५ दिन बाद करते रहें । पाउडरी मिल्डयु के लिए ०.३ प्रतिशत (३ ग्राम प्रति लीटर पानी में) घुलनशील सल्फर की स्प्रे ७ दिन के अन्तर पर करें ।

फ्रैंचबीन - इसे सभी प्रकार की मिट्टियों में उगया जा सकता है । मैदानी क्षेत्रों में २० से ३० जनवरी तक बोया जा सकती है । झाडीनुमा किस्मों कोनटनडर व पूसा सरवती का ३५ कि.ग्रा. बीज को २ फुट लाईनों में तथा ८ ईच पौधों में दूरी पर लगाएं । लम्बी ऊची किस्में कैन्टुकी व हेमलता के १५ कि.ग्रा. बीज को ३ फुट लाईनों में तथा 1 फुट पौधें में दूरी पर लगाएं । बेले चढऩे के लिए लकडी या लोहे के खम्बे लगाएं । बीजाई से पहले खेत में १०० किंवटल गोबर की सडी-गली खाद, ४ बोरे सिंगल सुपर फास्फेट, 1 बोरा म्युरेट आफ पोटाश तथा 1 बोरा यूरिया डालें । पहली सिंचाई, बीजाई के १५ दिन बाद करें ।

पालक व मेथी - हर १५-२० दिन बाद कटाई करके पालक में २० कि.ग्रा. तथा मेथी में १० कि.ग्रा. यूरिया छिडक कर हल्की सिंचाई करें तथा खरपतवार निकाल दें । कीट नियंत्रण के लिए दवाई प्रयोग न करें परंतु बहुत अधिक आक्रमण होने पर कटाई करके खेत में २ मि.ली. मैलाथियान ५० ई सी प्रति लीटर पानी में घोलकर स्प्रे करें ।

मूली व गाजर - पूसा हिमानी मूली किस्म दिसम्बर से फरवरी तक लगा सकते है ।यह ४०से ५० दिन में तैयार हो जाती है तथा हल्का तीखा स्वाद देती है । जापानी व्हाइट मूली खेत में है तो सिचाई तथा गुडाई समय-समय पर करें तथा खरपतवार निकाल दें । मूली व गाजर को तैयार होने पर उखाडने से २-३ दिन पहले हल्की सिंचाई करें । इन फसलों को उखाडने में देर न करें क्योकि देर से इनकी गुणवत्ता खराब हो जाती है तथा मूल्य भी कम मिलता है ।

आलू व प्याज - आलू की फसल में जब पत्तियां व तने पीले पडने लगे तो उन्हें काट दें तथा १०-१५ दिन बाद मिट्टी खोदकर आलू निकाल लें इससे आलू काफी देर तक खराब नहीं होता । प्याज की रोपाई १५ जनवरी तक की जा सकती है । रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई करें ।

फल - आम, अमरूद, अंगूर, नींबू जाति के बागों में साफ सफाई, गुडाई, काट-छांट, खाद वगैरा देने का काम जनवरी में कर सकते है । कटाई-छटाई में पुरानी बीमार व सूखी टहनियां निकाल दें तथा फंफूद नाशक ०.३ प्रतिशत कापर आक्सीक्लाराइड स्प्रे करें । जनवरी में अंगूर, आडू, अलुचा, अनार व नाशपाती के पेड लगाने के लिए सर्वोत्तम समय है । विधि हम पिछले माह बता चुके है । पेड लगाने के समय दीमक नियंत्रण जरूर करें । अंगूर के बेलें १५ जनवरी से १५ फरवरी तक १० फुट के फासले पर लगा दें । नई बेलों को गोबर की खाद २० कि.ग्रा. प्रति बेल जनवरी माह में देकर सिंचाई करें । बेल चडाने के तरीको में हैड, निफिन, टेलीफोन तथा बाबर मुख्य है इनका चुनाव किस्मों के हिसाब से करें ।

फूल - बसंत ऋतु के फूल पूरी बहार पर है । निरंतर गुडाई व सिंचाई करते रहें तथा पाले से बचाव रखें । गर्मी के फूलों के लिए भी नर्सरी की तैयारी शुरू कर दें ।

किसान भाई जनवरी में होने वाली बाकी क्रियाओं के बारे में जानकारी हमसे सीधा फोन (०१२०-२५३५६२८) से अथवा ई-मेल : krishipramarsh@kribhco.net से भी संपर्क कर सकते है ।